

1. प्रश्न - संसाधन की परिभाषा लिखें। संसाधनों को विभिन्न वर्गों में विभाजित करें।

उत्तर - मानवीय जीवन के हर आवश्यकताओं को प्रकृति या कृत्रिम रूप से पूर्ति करने में जो सहायक होता है, वह संसाधन होता है।

जो वस्तु मानवीय जीवन में सहायक नहीं होता है, वह संसाधन नहीं होता है।

संसाधनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

(i) प्रकृतिक संसाधन - प्रकृतिक प्रदत्त भूमि, जल, खनिजों और वनों की गणना प्रकृतिक संसाधनों में की जाती है। ये संसाधन दो प्रकार के होते हैं - जैविक और अजैविक। सभी प्रकार के जीवमंडल से प्राप्त वन और जीव-जंतु जैविक संसाधन होते हैं, तथा भूमि, जल और मृदा अजैविक संसाधन हैं। कुछ खनिज भी जैविक संसाधन हैं, जैसे - कोयला। कुछ अजैविक संसाधन हैं जैसे - लौह-आयरन।

(ii) मानव निर्मित संसाधन - मानव द्वारा निर्मित संसाधनों को मानव निर्मित संसाधन कहते हैं। ~~इन्हें~~ इंजीनियरिंग, प्रद्यौगिकी, मशीनें, अवन, स्मारक, चित्रकलाएँ और सामाजिक संस्थाएँ कुछ मानव निर्मित संसाधन हैं। इसके अतिरिक्त मनुष्य की अपनी बुद्धि, विवेक और कुशलताएँ सभी मानवीय संसाधन हैं।

2. प्रश्न - उपयोगिता के आधार पर संसाधन को वर्गीकृत करें।

उत्तर - उपयोगिता के आधार पर संसाधन दो प्रकार के होते हैं -

(i) नवीकरणीय संसाधन - वे संसाधन जिन्हें भौतिक, रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा पुनः (नवीकृत) प्राप्त किया जा सकता है, वह नवीकरणीय संसाधन होता है। जैसे - सौर-ऊर्जा, जल-विद्युत, पवन-ऊर्जा इत्यादि।

(ii) अनवीकरणीय संसाधन - वे संसाधन जिन्हें नवीकृत या पुनः प्राप्ति नहीं किया जा सकता है, अनवीकरणीय संसाधन कहलाते हैं। ऐसे संसाधनों का विकास लम्बी अवधि में जाटिल प्रक्रियाओं द्वारा होता है। इस प्रक्रिया को पूरा करने में लाखों वर्ष का समय लगता है। जैसे जीवाश्म ईंधन - कोयला, खनिज तेल इत्यादि।



3. प्रश्न - स्वामित्व के आधार पर संसाधनों का वर्गीकरण करें -

2

उत्तर - स्वामित्व के आधार पर संसाधन चार प्रकार के होते हैं।

i. व्यक्तिगत संसाधन - निजी संसाधन पर किसी श्वास व्यक्ति का स्वामित्व होता है, जिसके बदले में वे सरकार को कर (लगान) भी चुकाते हैं। जैसे - भूखंड, घर, जमीन, तालाब इत्यादि।

ii. सामुदायिक संसाधन - सामुदायिक संसाधन पर आधिपत्य किसी श्वास समुदाय में होता है। ये संसाधन समुदाय के सभी सदस्यों को उपलब्ध होते हैं। जैसे - सार्वजनिक पार्क, पिकनिक स्थल, खेल का मैदान मंदिर, मस्जिद, श्मशान, चारागाह, गुरुद्वारा एवं गिरिजा घर इत्यादि।

iii. राष्ट्रीय संसाधन - कानूनी रूप से देश के अन्तर्गत सभी उपलब्ध संसाधन राष्ट्रीय संसाधन होते हैं। सांविधिक तौर पर देश की सरकार को यह अधिकार है, कि वे व्यक्तिगत संसाधन का आधिग्रहण आम जनता के हित में कर सकती है। खास तौर पर समीप 19.2 कि० मी० का सागरीय क्षेत्र किसी देश की राष्ट्रीय सम्पदा होती है।

iv. अंतर्राष्ट्रीय संसाधन - अंतर्राष्ट्रीय संसाधनों पर नियंत्रण अंतः-राष्ट्रीय संस्था का होता है। समुद्री तट रेखा से 200 कि० मी० की दूरी को छोड़कर खुले महासागरीय संसाधनों पर किसी देश का अधिकार नहीं होता है। ऐसे संसाधनों का उपयोग सिर्फ शोध कार्य हेतु अंतर्राष्ट्रीय संस्था की सहमति किसी देश द्वारा किया जा सकता है।

4. प्रश्न - संसाधनों का संरक्षण क्यों आवश्यक है ?

उत्तर - प्राकृतिक संसाधनों का व्यापक संग्रह और भोजनाबहुत उपयोग ही संरक्षण कहलाता है। अर्थात् संसाधनों का निभोजित एवं विवेकपूर्ण उपयोग ही संरक्षण कहलाता है।

संसाधन पर्यावरण के अंग होते हैं। उसके सही उपयोग से पर्यावरण को संतुलित रखा जा सकता है। आवश्यकता से अधिक संसाधनों का उपयोग पर्यावरण असंतुलित हो जाता है। नवीकरणीय स्रोत संसाधनों के सही उपयोग से हम स्वयं कम उत्पन्न होती हैं। अनवीकरणीय संसाधनों के प्रती और अधिक खर्च होने की आवश्यकता है, क्योंकि इन्हें पुनः नवीकृत नहीं किया जा सकता है। हमें इनके संरक्षण के लिए अनेक उपाय अपनाने चाहिए।

संसाधन के संरक्षण हेतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सम्मेलन हुए हैं। सर्वप्रथम स्वीडन में विश्व शिखर सम्मेलन 1972 में आयोजित हुआ था। इसी सम्मेलन के बाद प्रतिवर्ष 5 जून को "पर्यावरण दिवस" के रूप में मनाया जाता है।